ONDIVEERAN

Ondiveeran hails from the integrated district of Thirunelveli, heading Pothigai hills ruled by little Kingdom namely Sirulimuthu Pattavarayan and Thiruneelakanda Pagadai. He was the first heroic rebel and commander-in-chief of the India freedom struggle against the British East India Company.

The legend was born in Sankaran Kovil as eighth family siblings of present Thenkasi district to the father Chellaiyah Pagadai and mother Karuppaiee who commanded the village Nerkattan Sevayal. His childhood name was Muthuveeran.

After the fall of Madurai Nayakars, due to the maneuver behaviour of the revenue tax collection officers of Arcot Nawab, the family predecessors of Mr. Ondiveeran lost their major part of the wealth in command and also, they lost the power of palayapattu. This act humiliated Ondiveeran. During the year 1775, heir-right war occurred in the Arcot Nawab family. Due to this conflict, the power of revenue collecting rights was acquired by the British East Indian Company again. Ondiveeran rebelled against this act strongly.

In March 1775, Ondiveeran defeated the army led by Mahfuzkhan, Yusuf Khan, and Colonel Heron in Nerkattan Sevayal. From 1757 to 1759, Ondiveeran led the army vanquished British East Indian Company supports in Gangai Kondan, Alwarkuruchi, Nerkattan Sevayal, Oothumalai, Surandai, and Vasudevanallur. In 1764, Ondiveeran headed battalion conquered Marudhanayagam alias Yusuf Khan in Nerkattan Sevayal.

In the battle of Vasudevanallur fort siege in 1767 headed by Captain Campbell was defeated by our Legend Battler Ondiveeran. His battalion victory travel extends up to Kalakadu, Srivilliputhur and Thenmalai also.After the bereavement of Puli thevar their sons namely Sivaganapandian, Sithiraputhirathevar and a daughter Gomathi Muthuthalachi were guarded by Ondiveeran. The legendary warrior never rested his sword and resisted against British East Indian Company until his last breath. On 20th August 1771, near Manur village of Thirunelveli district Ondiveeran was defeated and died during the battle with British East Indian Company.

After the death of the great legend warrior, Ondiveeran the defenceless descent followers and arunthathiyar leaders like Panchalangkuruchi Pottipagadai, Sivagangai kuyili, Sangagri Pollan, Madhari played a remarkable role in the army war field of first and second Palayakarar, kattabomman, Velunachiyar, Theeran chinnamalai and Maruthu brothers against British East India Company.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Ondiveeran, the unsung hero of India.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure	:	Ms. Gulistaan
Cancellation Cachet	:	Smt. Nenu Gupta
Text	:	Referenced from the contents provided by the proponent.

ओंडिवीरन

ओंडिवीरन थिरुनेलवेली के एकीकृत जिले से आते हैं, जो पोथिगई पहाड़ियों की दिशा की ओर था। यह जिला छोटे साम्राज्य अर्थात् सिरुलीमुथु पट्टावरायण और थिरुनीलकंदा पगाडई द्वारा शासित था। वे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के विरुद्ध विद्रोह करने वाले भारत के स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम शूरवीर विद्रोही और कमांडर–इन–चीफ थे।

महान ओंडिवीरन का जन्म वर्तमान थेनकासी जिले के शंकरन कोविल में हुआ जो अपने भाई–बहनों में आठवें भाई थे। इनके पिता का नाम चेलैयाह पगाडई और मां का नाम करुप्पई था, जिनके हाथों में नेरकट्टन सेवायाल गांव की कमान रही थी। उनके बचपन का नाम मुथुवीरन था।

मदुरै नायकरों के पतन के पश्चात, अर्कोट नवाब के राजस्व कर संग्रह अधिकारियों के छलपूर्ण व्यवहार के कारण, श्री ओंडिवीरन के पूर्वजों ने अपनी नियंत्रित संपत्ति का एक बड़ा भाग खो दिया और साथ ही, उन्होंने पलायपट्टू की सत्ता भी खो दी। इस कृत्य से ओंडिवीरन ने स्वयं को अपमानित महसूस किया। वर्ष 1775 में, आर्कोट नवाब परिवार में उत्तराधिकारी के लिए संघर्ष हुआ। इस संघर्ष के कारण, ब्रिटिश ईस्ट इंडियन कंपनी द्वारा राजस्व एकत्र करने संबंधी अधिकार पुनः प्राप्त कर लिए गए। ओंडिवीरन ने इस कृत्य का दृढ़तापूर्वक विरोध किया।

मार्च 1775 में, ओंडिवीरन ने नेरकट्टन सेवायल में महफूजखान, युसूफ खान और कर्नल हेरोन के नेतृत्व वाली सेना को पराजित किया। 1757 से 1759 तक, ओंडिवीरन के नेतृत्व वाली सेना ने गंगई कोंडन, अलवरकुरुची, नेरकट्टन सेवायाल, ऊथुमलाई, सुरंडाई और वासुदेवनल्लूर में ब्रिटिश ईस्ट इंडियन कंपनी के समर्थन वाली सेना को पराजित किया। 1764 में, ओंडिवीरन के नेतृत्व वाली बटालियन ने नेरकट्टन सेवायल में मरुधनायगम उर्फ युसूफ खान पर विजय प्राप्त की।

1767 में वासुदेवनल्लूर किले की घेराबंदी के युद्ध में हमारे महान लड़ाके ओंडिवीरन ने कैप्टन कैंपबेल के नेतृत्व वाली सेना को पराजित कर दिया। उनकी बटालियन की विजय यात्रा कलाकाडु, श्रीविल्लिपुथुर और तेनमलाई तक भी पहुँच गई थी। पुली थेवर की मृत्यु के पश्चात, श्री ओंडिवीरन द्वारा उनके पुत्र शिवगणपांडियन, सिथिरापुथिराथेवर और पुत्री गोमती मुथुथलाची की रक्षा की गई। यह महान योद्धा कभी भी युद्ध से दूर नहीं रहे और अपनी अंतिम सांस तक ब्रिटिश ईस्ट इंडियन कंपनी का विरोध करते रहे। 20 अगस्त 1771 को, थिरुनेलवेली जिले के मनुर गांव के निकट, ब्रिटिश ईस्ट इंडियन कंपनी के साथ हुए युद्ध में ओंडिवीरन पराजित हुए और उनकी मृत्यु हो गई।

महान योद्धा ओंडिवीरन की मृत्यु के पश्चात, अरक्षित वंश, अनुयायियों और पंचालम कुरुचि पोट्टीपगडई, शिवगंगाईकुयिली, संगगरी पोलन, माधरी जैसे अरुंथथियार अधिनायकों और मारुथु बंधुओं ने प्रथम एवं द्वितीय पलायकर, कट्टाबोम्मन, वेलुनाचियार, थेरन चिन्नामलाई के सेना युद्ध क्षेत्र में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के विरुद्ध संग्राम में असाधारण शूरवीरों की भूमिका निभाई।

डाक विभाग भारत के गुमनाम नायक ओंडिवीरन पर एक स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका : सुश्री गुलिस्तां

विरूपण कैशे : श्रीमती नीनू गुप्ता

पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सूचना के आधार पर

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	:	203700
Stamps Printed	:	203700
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य ₹ 5.00